आर.एन.आई.नं. RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी. सं. RJ/UD/29-128/2015-2017

मन के जीते जीत सदा

अंक-217 | तारीख- 13 जुलाई, 2015, द्वितीय आषाढ़ कृष्ण- 12 | सोमवार | उदयपुर | कुल पृष्ठ-2 | मूल्य -1 रूपया

सुविचार

कर्म भूमि पर फल के लिए
श्रम सबको करना पड़ता है,
रब सिर्फ लकीरें देता है
रंग हमें खुद भरना पडता है।

रामचरितमानस - दोहावली

कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू।
आएँ सरन तजउँ नहिं ताहू।।
सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं ।
जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं।।

अर्थ:जिसे करोड़ों ब्राह्मणों की हत्या लगी हो, शरण में आने पर मैं उसे भी नहीं त्यागता। जीव ज्यों ही मेरे सम्मुख होता है, त्यों ही उसके करोड़ों जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं

पापवंत कर सहज सुभाऊ,भजनु मोर तेहि भाव न काऊ।
जौं पै दुष्ट हृदय सोइ होई, मोरें सनमुख आव कि सोई।।
अर्थ: पापी का सहज स्वभाव होता है कि मेरा भजन उसे कभी नहीं सुहाता। यदि वह (रावण का भाई) निश्चय ही दुष्ट हृदय का होता तो क्या वह मेरे सम्मुख आ सकता था?

त्वचा

– यह शरीर को ढकती है और शरीर के विभिन्न छिद्रों अथवा ओरिफीसिस की मेम्ब्रेन लाइनिंग से जुड़ी रहती है।
– त्वचा नीचे वाले स्ट्रक्चर्स को चोट और कीटाणुओं के प्रवेश से बचाती है।
– इसमें दर्द, तापमान और छूने के लिये सेन्सरी तंत्रिकाएँ होती हैं।
– त्वचा शरीर के तापमान को नियंत्रित करने में भी शामिल होती है।

क्या आपश्री जानते है ?

प्रश्न : अल्पबुद्धि वाले को कहा जाता है ?
उत्तर : **अल्पमति**
प्रश्न : कोणिक की पटरानी बनी ?
उत्तर : **पद्मावती**
प्रश्न : चन्द्रलेखा की माता का नाम क्या था ?
उत्तर : **वीरमति**
प्रश्न : कनकवती की सखी सार्थवाह की पुत्री का नाम क्या था ?
उत्तर : **प्रेमवती**
प्रश्न : संसार की सबसे प्राचीन भाषा का नाम क्या है ?
उत्तर : **संस्कृत**
प्रश्न : विश्व का वह कौन–सा देश जहाँ राष्ट्रीय शोक दिवस पर झण्डा नहीं झुकता ?
उत्तर : **सउदी अरब**
प्रश्न : विश्व की प्रथम महिला प्रधानमंत्री कौन थी ?
उत्तर : **श्रीमती भण्डार नायके**

अब मोबाइल फोन से डायल हो सकेगा लैंडलाइन नंबर

भले ही कितनी मोबाइल क्रांति हो गई हो लेकिन आज भी स्पष्ट और बिना बाधा के बातचीत के लिए लैंडलाइन फोन की ही याद आती है। लोगों के पास ऑफिसों एवं घरों में लैंडलाइन फोन हैं भी, लेकिन एक जगह पर बैठे रहने और मोबाइल से नंबर छांटकर डायल करने का झंझट रहता है। इसलिए लोग लैंडलाइन के इस्तेमाल से बचते हैं। लेकिन बहुत जल्दी नई तकनीक में मोबाइल फोन को लैंडलाइन के काडलैस की तरफ इस्तेमाल करना संभव हो सकेगा।

बीएसएनएल की लैंडलाइन की नेक्सट जनरेशन नेटवर्क (एनजीएन) सेवा।

BHARAT SANCHAR NIGAM LTD.

इस सेवा क जरिए बीएसएनए लैंडलाइन की करीब तीस साल पुरानी तकनीक को बदल देगा और इंटरनेट प्रोटोकॉल (आईपी) आधारित एनजीएन की शुरुआत करेगा।

केंद्रीय संचार सचिव राकेश गर्ग ने बताया कि वैसे तो एनजीएन के कई फायदे हैं। इससे वीडियो कांफ्रेंस हो सकती है, आडियो कांफ्रेंसिंग हो सकती है। इंटरनेट चलाया जा सकता है, टीवी चल सकता है। लेकिन जो सबसे बड़ी बात यह है कि यह नेटवर्क लैंडलाइन एवं मोबाइल फोन सैट में कनेक्टिविटी प्रदान करेगा। इसके लिए लैंडलाइन के सैट में थोड़े बदलाव किए जाते हैं और फिर वाई–फाई के जरिये लैंडलाइन नंबर मोबाइल से कनेक्ट हो जाता है।

गर्ग के अनुसार जैसे ही आपका मोबाइल आपकी लैंडलाइन से संबद्ध हो जाता है तो आप मोबाइल से नंबर डायल कर लैंडलाइन नेटवर्क का इस्तेमाल कर सकते हैं। बिल भी लैंडलाइन का ही बनेगा। इसी प्रकार जैसे ही लैंडलाइन पर आने वाली कॉल को मोबाइल पर सुन सकते हैं। फायदा यह है कि मोबाइल की तुलना में कहीं ज्यादा स्पष्ट और निर्बाध बातचीत की जा सकेगी। इसमें मोबाइल की कॉल खर्च नहीं होती है और अपनी सुविधानुसार इसे लैडलाइन से संबद्ध किया जा सकता है।

बीएसएनएल के सीएमडी अनुपम श्रीवास्तव के अनुसार अगले दो सालों के भीतर सभी 35 हजार बीएसएनएल एक्सचेंजों को इस तकनीक में बदल दिया जाएगा। पहले चरणों में शहरी क्षेत्रों की लाइनों को एनजीएन में बदला जाएगा। इस पर पहले से काम चल रहा है तथा 40 लाख लाइनें इस साल के अंत तक एनजीएन में बदल जाएंगी।

ज्ञानवर्धन

ध्यान करने की विधि

कहीं भी कुछ मिनट स्थिर होकर बैठें। स्थान कोलाहल–रहित व स्वच्छ हो। अब आप अपने मन में उठने वाले विचारों को देखें। आपको आश्चर्य होगा कि किस प्रकार एक विचार से दूसरा .....तीसरा व अनेकों सूत्र जुड़ते चले जा रहे हैं। पहले आप यह तो जानते थे कि आपका हृदय एक स्वचालित यन्त्र है परन्तु शायद आप यह नहीं जानते थे कि आपका मन या विचार हृदय से हजार गुना गति से सदा चलता ही रहता है। यह न तो विश्राम करना जानता है, न कोई दिशा या नियमों का बन्धन मानता है। इसकी निरकुंशता की कोई सीमा नहीं, कोई नाप नहीं। आपको सदा अस्त–व्यस्त रखने में यह सदा सफल हो जाता है। आपके सारे जीवन की वास्तविक बागडोर अपने हाथों में थामे यह उड़ा ही चला जाता है। जितना आप इसे रुकने को कहते हैं यह उतना ही तेज दौड़ता है। आप इससे भले ही तंग आ जायें परन्तु इसे इसकी कोई परवाह नहीं है। आपको हैरत होती है कि मेरा ही हिस्सा होकर यह मुझी पर शासन करता है। अपनी ही मनमानी करता है। मैं इसे कुछ याद रखने को कहता हूं तो यह भूलने का तर्क देता है। मैं कुछ भुलाना चाहता हूं तो यह उसकी ही याद दिलाये जाता है.....। उफ् कितनी जटिल समस्या है ? यह सोचकर इसी को समर्पण कर देना क्या आपके लिये अन्तिम विकल्प होना चाहिये ? नहीं! इसको सही विधि से नियन्त्रित किया जा सकता है।

अपने भीतर उठते विचारों को केवल देखें, उन्हें रोकने, बदलने या दबाने का प्रयास न करें। भले ही वह विचार अच्छे हों या बेतुके, बुरे हों या व्यवस्थित। आप हैरान अवश्य होंगे कि पलभर में विचारों के इतने घनघोर समूह भला कहां से चले आते हैं, यह विचार मुझे क्यों व कैसे आया ? यह मेरे भीतर था, अरे मैं तो जानता ही न था.....आप बिना प्रतिक्रिया करे केवल इन्हें देखते जायें। धीरे–धीरे आप पायेंगे कि आपको अब वे विचार विचलित या उद्विग्न नहीं कर रहे तथा उनका प्रवाह भी समरस या सन्तुलित होता जा रहा है। यह अभ्यास प्रतिदिन निश्चित समय निर्धारित कर करते रहिये। कुछ ही दिनों बाद आपका ध्यान स्थिर होने लगेगा। आपको अपना चित्त क्रमशः शान्त व हल्का–फुल्का लगेगा। निरन्तर का यह अभ्यास आपको गहरी शान्ति व सुख की अनुभूति करायेगा। आपका स्वास्थ्य सुधरने लगेगा। आपको मानसिक शान्ति की उच्चकोटि की दशा में शुभ विचार व लोक कल्याण की भावनाएं स्पर्श करेंगी। यह कोई काल्पनिक आश्वासन नहीं वरन् हमारे ऋषियों व सन्तों की खोजी गयी बेशकीमती धरोहर है।

हमारी आँख

आँख – इससे दृष्टि का ज्ञान होता है। आँखों के विशेष भाग द्वारा प्राप्त चेतना कापालिक तंत्रिकाओं के दूसरे जोड़े द्वारा दृष्टि केन्द्र को प्रभावित करती हैं। परिणामतः दृष्टि का बोध होता और हम देखते हैं। आँखें दो होती हैं। प्रत्येक लगभग एक इंच व्यास की लम्बाई लिए गोल होती है। सामने वाला भाग अपेक्षाकृत उभरा हुआ होता है। दायीं से बायीं ओर के व्यास की लम्बाई अपेक्षाकृत अधिक होती है। इसलिए इसे पूर्णगोल कहना उचित नहीं होगा। दोनों आँखें नाक के दायें–बायें चक्षु गहवर (आँख के गड्ढे) में अवस्थित होती है। प्रत्येक आँख में 6 पेशियाँ होती हैं। इनमें से 4 सीधी और दो तिरछी होती हैं। इन पेशियों की सहायता ही हम ऊपर नीचे दायें–बायें आँखों को घुमाकर देखने में सक्षम होते हैं। इन पेशियों का सम्बन्ध कापालिक संचालक तंत्रिकाओं द्वारा तीसरी, चौथी और छठी जोड़ी से होता है। इन पेशियों द्वारा ही आँखें अपने स्थान पर सधी हुई होती हैं। आँखों के गोलकों की रक्षा पलकों द्वारा होती हैं। ये पलकें पेशियों एवं चर्म द्वारा निर्मित होती हैं। ऊपरी पलक नीचे वाली की अपेक्षा बड़ी होती है। इन पलकों एवं चर्म द्वारा निर्मित होती हैं। ऊपरी पलक नीचे वाली की अपेक्षा बड़ी होती है। इन पलकों के किनारों पर बाल होते है, जिन्हें बरौनी कहते हैं।

मानव मन के बोल

(आत्मकथा)

सार-सार गहिले .... थोथा देय उड़ाय

चन्दनस्य महत्वपूर्णम्,
पवित्रम् पापनाशनम्
आपदाम् हरतम् नित्यम,
लक्ष्मी तिष्ठते सर्वदा।

मैंने तो देखा महाराज कि–
भजन करे पाताल में,
प्रकटत होय आकाश,
दाबी दूबी ना दबे, कस्तुरी की वास।

मैं अपने जीवन में अतीत के पृष्ठों को जब पलटता हूँ, मुझे याद आती है ईमानदारी की वो मिसाल। हमारे शान्तिलाल जी जिनका स्वर्गवास हो गया, नवलचन्द्र जी अभी हैं। उन भाइयों के किसी परिवार के बच्चे को गली में एक सोने की, कान में जो लगाते हैं कानों के झुमकों का जोड़ा मिला। उन्होंने तुरन्त अपनी माँ को कहा– माताजी, माताजी ! रास्ते में किसी के कानों के झुमके पड़े हुए थे। माताजी ने पहचाना कि अरे ! बाबा रा वेई, बाबा रा वेई। और बाबा री वा बेटी है नी कमला देवी जी, वा पेरिया करे है। जा, जा, जल्दी जा। क्योंकि वणाने चिन्ता लागरी वेला। जल्दी जा न वणा ने पूछ ! वणा रा ही वेला ! और वो बच्चा दौड़ा–दौड़ा आया। बाबा, बाबा! आपणा कमला जीजी के झूमके तो नहीं गिर गए कहीं ? देखा एकदम कान पर तो झूमके नहीं थे। कहा कि – बाई कहीं गिर गए तो उस लड़के ने तुरन्त दे दिए। कितनी ईमानदारी। कहते हैं कि Honesty is the best policy.

ईमानदारी हजारों मनकों में चमकता एक हीरा है। बेईमानी का दूसरा नाम झूठ बोलना है। आदमी के मन में पाप आ जाता है, पाप के बाद लोभ आ जाता है, झूठ बोलता है, बेईमानी करता है, ठगता है, एक झूठ का दस झूठ बोलता है। मनुष्य खुद से कितना धोखा करता है। अपने आप से धोखा। आत्मा को कलुषित बना देना। मैंने जब कल्याण पढ़ा। जैसे मैंने पहले निवेदन किया भाई साहब हनुमान जी पोद्दार को और जयदयाल जी गोयनका। भाई आपको ईश्वर तुल्य मानता हूँ।

क्रमश अगले अंक में.....

सम्पादकीय

माँ ने बच्चे को भेजा, मिठाई लाने। बात पुराने जमाने की है न : सो उस समय कहा गया –''देख बेटा, फीकी मिठाई न ले आना, मीठी देखकर लाना। एक जगह नहीं तीन–तीन जगह। बच्चे ने कहा ''नहीं–नहीं यह तो फीकी है।'' चौथा हलवाई बुद्धिमान था, – पूछा बेटा ''मुन्ने मुँह में कुछ रख तो नहीं रखा पहले से ?'' और बच्चे के मुख से निकली ठंडाई की मीठी गोली, जिसे चूसता जा रहा था और चखता भी जा रहा था मिठाई।

आदरणीय महानुभावों, सन्त श्री के मुख से सुना है–''स्वच्छ पानी से भरने के लिए अपने हृदय रूपी घड़े का गंदा पानी खाली तो कीजिये। कुछ पाने के लिए थोड़ा तो दीजिये।''

जी हाँ, सत्संग रूपी जन हितकारी बातों को सन्तों ने नाना प्रकार से कहा है, कई तरीकों से। कभी मीठे केप्सूल के खोल में कड़वी दवाई सरीखा – कभी कहानी में –कभी कविता में।

बार–बार मन में आता था, हमारे बच्चे भी ऋषि दधीचि का त्याग, राजा हरिशचन्द्र की सत्य निष्ठा, शबरी की प्रभु भक्ति जानना चाहते हैं, देखना चाहते हैं। किसी कोने से आवाज आती थी –''अरे भाई आजकल किसको सुहाती है ये चीजें, परन्तु वाह! रामायण जो दिखाई जा चुकी और महाभारत जो देख रहे हैं, उनकी इस लोकप्रियता ने यह सिद्ध कर दिया कि मानव समाज की असली भूख है :–

अच्छाई–अच्छाई अच्छाई।

आइये, हम भी फूलों के बीज बिखरें–उस रेल यात्री की तरह जो यात्रा करते हुए खिड़की के बाहर बीज डालता हुआ प्रसन्न मन से सोच रहा था–कुछ तो उगेंगे। मैं नहीं तो क्या जो देखेगा वह तो राजी होगा ही।

चाणक्य नीति

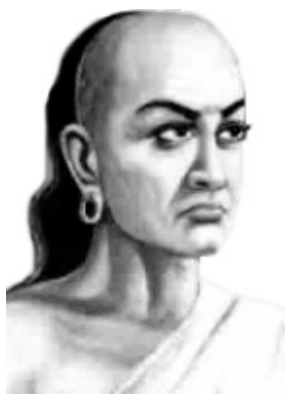

पत्नी का बिछुड़ना, अपने बन्धु–बान्धवों से अपमानित होना, अपने पर कर्ज चढ़े रहना, दुष्ट अथवा बुरे मालिक की सेवा में रहना, निरंतर निर्धन बने रहना, दुष्ट लोगों और स्वार्थियों की सभा अथवा समाज में रहना, ये सब ऐसी बातें हैं, जो बिना अग्नि के शरीर को हर समय जलाती रहती हैं।

सोमवार का चौघड़िया

छः बजने से सात तीस तक, अमृत समय विधान,
नौ बजने से साढ़े दस तक, शुभ का समय महान।
तीन बजे से चार तीस तक, समय लाभ का जान,
साढे चार से छः बजने तक, अमृत कहत सुजान।।

।।जय नारायण।।

विकलांग चंचल को दिया नारायण सेवा संस्थान ने स्कुटी का तोहफा

अजमेर (राजस्थान) जिले की मूल निवासी चंचल कुमारी (25) जन्म से ही विकलांग है। पिछले वर्ष चंचल कुमारी के पिता शंकरलाल के निधन से मानों सारे परिवार पर मुसीबतों का पहाड़ ही टुट पड़ा। घर की समस्त जिम्मेदारी चंचल के कंधों पर आ गयी। आर्थिक स्थिति बद से बदत्तर हो गई। किसी तरह चंचल कुमारी को सेवा प्रदाय (कोन्ट्रेक्ट) के आधार पर कम वेतन पर कम्प्यूटर ऑपरेटर की नौकरी नसीब हुई। यह वेतन इतना भी नही कि घर की समस्त जरूरतों को पुरा किया जा सके। विकलांग होने के कारण उसे नौकरी पर आने–जाने में काफी दिक्कत होती थी। समाचार पत्रों के माध्यम से उसे नारायण सेवा संस्थान के विभिन्न निःशुल्क सेवा प्रकल्पों की जानकारी प्राप्त हुई। इससे उसके दिल में आशा की किरण जाग उठी। उसने तुरन्त संस्थान अध्यक्ष श्री प्रशान्त अग्रवाल एवं संस्थान निदेशक श्रीमती वन्दना अग्रवाल से मिल कर अपनी स्थिति से अवगत कराया। चंचल कुमारी की विकलांगता एवं कमजोर आर्थिक स्थिति को देखते हुए श्रीमती एवं श्री अग्रवाल ने संस्थान की ओर से उसे 'निःशुल्क' स्कुटी प्रदान की। अब चंचल कुमारी को ऑफिस जाने–आने व अन्य कार्यो को करने में काफी सहुलियत होगी। चंचल कुमारी के मुस्कराते चेहरे को देखते हुए ऐसा लगा मानो उसे खुशियों का खजाना मिल गया हो।

जरूरत से ज्यादा पानी तो नहीं पी रहे आप ?

अगर आप टीवी, रेडियो या मैगजीन पढ़ कर अपने लिये पानी की मात्रा तय करते हैं तो शायद एक दिन में 18 गिलास या 2 लीटर पानी पीते होंगे। आप सोचते होंगे कि हेल्थ एक्सपर्ट इतने ही पानी की सलाह देते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि हेल्थ एक्सपर्ट पानी की उस समय मात्र की बात करते हैं, जिसका सेवन हम रोज करते हैं। मसलन सब्जियों और फलों के जरिये लिया जाने वाला पानी, ग्रीन टी और चावल के जरिये मिलने वाला पानी, दूध के जरिये मिलने वाला पानी। इसके बाद प्यास महसूस होने पर शुद्ध पानी। अब जरा सोचिये, अगर आप ऐसा भोजन भी करते हैं, जिसमे पानी की अच्छी मात्रा है और उसके ऊपर से 18 गिलास या 2 लीटर पानी भी पीते हैं तो जाहिर है कि आपके शरीर में पानी की ओवरडोज जा रही है। चूंकि थोड़े समय पहले तक लोग फिटनेस फीक्र नहीं थे, फल, सब्जी या जूस का सेवन भी कम करते थे, इसलिये पानी पीने पर जोर दिया जाता था, ताकि सही मात्रा में पानी शरीर में जाये। लेकिन आज जब लोग ऐसी चीजों का सेवन कर रहे हैं, जिनके जरिये पानी शरीर में जाता है तो पानी का अतिरिक्त सेवन करने की खास जरूरत नहीं है। हम रोजाना जो चीजें खाते हैं, उनमें भी पानी की पर्याप्त मात्रा होती है। मसलन 100 ग्राम सेब में 84.5 ग्राम पानी होता है। 100 ग्राम अंगूर में 81.8 ग्राम पानी होता है। 85 ग्राम स्वीट कॉर्न में 59.42 ग्राम पानी होता है। 220 ग्राम टमाटर के सूप में 185.24 ग्राम पानी होता है। 100 ग्राम आम में 84 ग्राम पानी होता है। दही और लहसुन में भी पर्याप्त मात्रा में पानी होता है। जूस, चाय या दूध, लीची, गाजरस, मुनक्का, खजूर, शलजम में भी पानी होता है।

उतना ही पानी पीना चाहिये, जितनी प्यास हो

चूंकि आज आदमी की डाइट में एक बड़ी मात्रा पानी की होती है, इसलिये व्यक्ति को उतना ही पानी पीना चाहिये, जितने की प्यास हो।

ज्यादा पानी के नुकसान

हेल्थ एक्सपर्ट मानते हैं कि जरूरत से ज्यादा पानी पीने से हमारी किडनी पर ज्यादा प्रेशर पड़ सकता है, जो नुकसानदेह है।

जरूरत से ज्यादा पानी पीने से हमारे दिल को भी खतरा हो सकता है।

जरूरत से ज्यादा पानी पीने से हमारे शरीर में मौजूद वह रस काम करना बंद कर देते हैं, जिनसे खाना पचता है। लिहाजा खाना देर से पचने लगता है। कई बार खाना ठीक से पच भी नहीं पाता।

पुराणों में वर्णित है कि एक बार माता पार्वती ने भगवान शिव से पूछा, आप अजर–अमर हैं और मुझे हर जन्म के बाद नए स्वरूप में आकर फिर से वर्षों की कठोर तपस्या के बाद आपको प्राप्त करना होता है। मेरी इतनी कठोर परीक्षा क्यों ? और आपके कंठ में पड़ी यह नरमुण्ड माला तथा आपके अमर होने का रहस्य क्या है ?

भगवान शंकर ने माता पार्वती से एकांत और गुप्त स्थान पर अगर कथा सुनने को कहा जिससे कि अमर कथा कोई अन्य जीव न सुन पाए। क्योंकि जो कोई भी इस अमर कथा को सुन लेता है, वह अमर हो जाता।

पुराणों के मुताबिक, शिव ने पार्वती को इसी परम पावन अमरनाथ की गुफा में अपनी साधना की अमर कथा सुनाई थी, जिसे हम अमरत्व कहते हैं। कहते हैं भगवान भोलेनाथ ने अपनी सवारी नंदी को पहलगाम पर छोड़ दिया, जटाओं से चंद्रमा को चंदनवाड़ी में अलग कर दिया और गंगाजी को पंचतरणी में तथा कठाभूषण सर्पों को शेषनाग पर छोड़ दिया। इस प्रकार इस पड़ाव का नाम शेषनाग पड़ा। अगला पड़ाव गणेश पड़ता है, इस स्थान पर बाबा ने अपने पुत्र गणेश को भी छोड़ दिया था, जिसको महागुणा का पर्वत भी कहा जाता है। पिस्सू घाटी में पिस्सू नामक कीड़े को भी त्याग दिया।

इस प्रकार महादेव ने जीवनदायिनी पांचों तत्वों को भी अपने से अलग कर दिया। इसके बाद मां पार्वती साथ उन्होंने गुप्त गुफा में प्रवेश कर दिया और अमर कथा मां पार्वती को सुनाना शुरू किया। कथा सुनते–सुनते देवी पार्वती को नींद आ गई और वह सो गई, जिसका शिवजी को पता नहीं चला। भगवान शिव अमर होने की कथा सुनाते रहे। उस समय दो सफेद कबूतर शिव जी से कथा सुन रहे थे और बीच–बीच में गूं–गूं की आवाज निकाल रहे थे। शिव जी को लगा कि माता पार्वती कथा सुन रही है और बीच–बीच में हुंकार भर रहीं हैं। इस तरह दोनों कबूतरों ने अमर होने की पूरी कथा सुन ली। कथा समाप्त होने पर शिव का ध्यान पार्वती की ओर गया, जो सो रही थीं। जब महादेव की दृष्टि कबूतारों पर पड़ी, तो वे क्रोधित हो गए और उन्हें मारने के लिए आगे बढ़े। इस पर कबूतरों ने भगवान शिव से कहा कि, हे प्रभू हमने आपसे अमर होने की कथा सुनी है यदि आप हमें मार देंगे तो अमर होने की यह कथा झूठी हो जाएगी। इस पर शिव जी ने कबूतरों को जीवित छोड़ दिया और उन्हें आशीर्वाद दिया कि तुम सदैव इस स्थान पर शिव पार्वती के प्रतीक चिन्ह के रूप निवास करोगे। अतः यह कबूतर का जोड़ा अजर–अमर हो गया । कहते हैं आज भी इन दोनों कबूतरों का दर्शन भक्तों को यहां प्राप्त होते हैं। और इस तरह से यह गुफा अमर कथा की साक्षी हो गई व इसका नाम अमरनाथ गुफा के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

वर्णमाला का विकास

किसी भी भाषा का विकास अचानक नहीं हो गया। सभ्य होने से पहले मनुष्य जंगलों में रहता था। उस काल में मनुष्य एक–दूसरे से बात करने के लिए तरह–तरह के इशारे करता था। इनमें ध्वनियों, चित्रों और भंगिमाओं की सहायता से किए जाने वाले संकेत महत्त्वपूर्ण थे जो किसी आवश्यकता अथवा भावना को प्रकट करते थे। धीरे–धीरे प्रत्येक चीज़ काम और बात के लिए तरह–तरह की आवाज़ें निश्चित होती गई। समय के साथ इन आवाज़ों या ध्वनियों को संकेतों में लिखने और व्यक्त करने की प्रक्रिया शुरू हुई और इन संकेतों के अक्षरों या वर्णमाला का विकास हुआ। धीरे–धीरे प्रत्येक चीज़, विचार और काम के लिए शब्द बनते गए। इन शब्दों से मिलकर वाक्य बने जिनका कोई न कोई निश्चित अर्थ होता था और वाक्यों का वह समूह, जिससे कोई भावना या विचार प्रकट होता था, भाषा बना। इस प्रकार भाषा का जन्म और विकास हुआ। भाषा की विकास–प्रक्रिया में लिखकर विचार प्रकट करने के लिए एक लिपि का विकास हुआ। क्या तुम्हें मालूम है कि वह पहली वर्णमाला कैसे बनी, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को लिखकर प्रकट कर सकता था ?

आदिकाल के लोग लिख कर अपने विचार बताने के लिए रेखाचित्रों का उपयोग करते थे। हम आज इन रेखाचित्रों को पिक्टोग्राफ (चित्रलेखा) कहते हैं। पाषाण काल के लोग (जब मनुष्य गुफाओं में रहता था और पत्थरों का इस्तेमाल हथियार के रूप में करते हुए उसने शिकार करना सीखा।) लिखने में इस भाषा का उपयोग करते थे। पिक्टोग्राफ में किसी विशेष चिन्ह या वस्तु जैसे पेड़ या चिड़िया की आकृति बनाई जाती है। इस विशेष चिन्ह द्वारा एक निश्चित अर्थ या विचार का पता चलता है। रेखाचित्रों द्वारा विचारों को भी एक–दूसरे को बताया जा सकता है। जैसे चिड़िया का रेखाचित्रों बनाने का अर्थ उड़ना भी हो सकता है। प्राचीन काल में मिस्र के लोग भी रेखाचित्र बना कर ही अपने विचार प्रकट करते थे, लेकिन इस लिपि में बहुत सी कमियां थीं। इसमें थोड़ी–सी बात बताने के लिए बहुत से रेखाचित्रों का उपयोग करना पड़ता था। इन कमियों के कारण मानव ने ऐसे चिन्हों की खोज की, जो बातचीत में इस्तेमाल होने वाली आवाज़ों को प्रकट कर सकें। नए शब्दों को बनाने के लिए भिन्न–भिन्न आवाज़ों को प्रकट कर सकें। नए शब्दों को बनाने के लिए भिन्न–भिन्न आवाज़ों का प्रतिनिधित्व करने वाले चिन्हों के अलग–अलग समूह बनाए गए। आज हम जिन्हें वर्ण या अक्षर कहते हैं, वे दरअसल आवाज़ों के संकेत चिन्ह हैं।

इनका सबसे पहले प्रयोग कब प्रारंभ हुआ? लगभग 3,500 वर्ष पहले भूमध्यसागर के पूर्व में रहने वाले फोनिशियन्स ने सबसे पहले वर्णमाला का आविष्कार किया। इसके बाद यूनान और रोम के लोगों ने अपनी–अपनी वर्णमालाएं विकसित कीं। ये वर्णमालाएं फोनिशियन लिपि के आधार पर सुधार करके विकसित की गई थीं।

अंग्रेजी भाषा का अल्फाबेट्स शब्द अल्फा और बीटा दो शब्दों को मिला कर बनाया गया है। ये यूनानी वर्णमाला के प्रथम दो अक्षर हैं।

वर्णमाला का आविष्कार हो जाने के बाद कुछ अक्षरों को मिलाकर शब्दों को बनाना सरल हो गया। उदाहरण के लिए अंग्रेज़ी वर्णमाला में केवल 26 अक्षर हैं, परंतु इनसे हज़ारों शब्दों का निर्माण हो चुका है। इसी तरह हिंदी भाषा में कुल 36 अक्षर हैं, परंतु इन्हें मिलाकर न जाने कितने हज़ार शब्द बना लिए गए हैं। रेखाचित्र लिपि में यह सुविधा नहीं है, क्योंकि उसमें एक चित्र द्वारा एक ही विचार या अर्थ प्रकट किया जा सकता है। सभ्य संसार की प्रत्येक भाषा की अपनी–अपनी वर्णमाला है, लेकिन वर्णमाला के अक्षरों के उच्चारण तथा उनकी संख्या में भिन्नता है।

''सिंहस्थ नासिक की पावन धरा पर''

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

द्वारा

45 दिवसीय विशाल सेवा, भक्ति, ज्ञान एवं अध्यात्म यज्ञ शिविर

!! दिनांक !! 12 अगस्त से 25 सितम्बर-2015

!! समारोह स्थल !! साधु ग्राम मैदान, नासिक

!! हर-हर महादेव !! !! हर-हर गंगे !!

नासिक की धरा पर हमारे प्रकल्प
(दिनांक 14 अगस्त से 25 सितम्बर तक)

विकलांगता जांच शिविर प्रतिदिन
प्रातः 1 बजे से 2 बजे तक

आवास व्यवस्था (सेपरेट)
50 रुम 7100/- प्रति रुम

छः या चार व्यक्ति सामूहिक आवास व्यवस्था 50 रुम (200 व्यक्ति)
3100/- प्रतिदिन

डोरमेट्री 4 हॉल (160 व्यक्ति)
2100/- प्रतिदिन

(राम कथा, भागवत कथा, शिव कथा)
सांय 3 से 6.30 बजे तक

भजन संध्याएँ : रात्रि 8 से रात्रि 11 बजे तक
राम लीला : रात्रि 8 से रात्रि 11.30 बजे तक
रास लीला : रात्रि 8 से रात्रि 11.30 बजे तक

मुख्य आयोजन एवं शाही स्नान

14 अगस्त 2015 : ध्वजारोहण
26 अगस्त 2015 : प्रथम स्नान 'श्रावण'
29 अगस्त 2015 : पहला शाही स्नान
13 सितम्बर 2015 : दूसरा शाही स्नान
18 सितम्बर 2015 : तीसरा शाही स्नान
25 सितम्बर 2015 : द्वादशी वामन स्नान

कुंभ वेला में आप पधारकर माँ गोदावरी में डुबकी लगाकर पावें पुण्य/पंजीयन खुला है-श्रीमान्

आपश्री यजमान बन सकते हैं।

कथा मुख्य यजमान	प्रतिदिन आरती यजमान	आंशिक यजमान	व्यास पूजन यजमान प्रतिदिन
3,51,000/-	11,000/-	11,000/-	11,000/-
भोजन प्रसाद यजमान	प्रसादी वितरण यजमान प्रतिदिन	पोथी यजमान	संकल्प सेवा
1,00,000/-	11,000/-	21,000/-	5,100/-

कैलाश 'मानव' संस्थापक चेयरमैन | कमला देवी सहसंस्थापिका | प्रशान्त अग्रवाल अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष | वंदना अग्रवाल निदेशक | जगदीश आर्य ट्रस्टी एवं निदेशक | देवेन्द्र चौबीसा ट्रस्टी एवं निदेशक

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
0294-6622222,07023420005,09829561926

मुख्य कार्यकारी अधिकारी – कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमला देवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक – सोहन गाडरी
संपादक – लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादक सहयोगी – घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमला देवी, मुद्रण स्थल–13,भोपा मगरी, बीएसएनएल एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर–3, उदयपुर (राज.) प्रकाशन स्थल–ई–डी–71 बापा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.) सम्पादक–लक्ष्मी लाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 मो.–09928022275,09785039524 www.mannkijeet.com Email:- mankijeet2015@gmail.com